भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्णजयन्ती-ग्रन्थमाला-४७

अभिनव-शारीर-संहिता

(अद्यतन शरीर ज्ञान का प्रतिपादन संस्कृत भाषा में)

हिन्दी भाषा में विमर्श के साथ अनूदित

प्रो० दिनकर गोविन्द थत्ते

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्णजयन्ती-ग्रन्थमाला-४७

अभिनव-शारीर-संहिता

(अद्यतन शरीर ज्ञान का प्रतिपादन संस्कृत भाषा में)

हिन्दी भाषा में विमर्श के साथ अनूदित

प्रो० दिनकर गोविन्द थत्ते

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालय
नवदेहली

Preface

I am delighted to write a few lines as preface to the work entitled "**Abhinava Sharira Samhita**" written by Prof. Dinkar Gobind Thatte along with Hindi translation. In this book which is written in loose knitted verses, Dr. Thatte made commendable effort to cull down Sanskrit technical terms from various Ayurvedic texts and to show them with their equivalents in the present day medical science. He has also made remarkable effort to coin new Sanskrit technical term as equivalent to Modern English term on the basis of Ayurvedic usages, etymology and Sanskrit grammer. While Prof. Thatte deserves rich complements for the up-hill task he has completed, it remains as a pointer to the fact that Sanskrit language can generate number of technical terms to denote modern scientific terminology. Indeed among the Indian languages Sanskrit alone has got this potentiality of coining new words equivalent to technical and scientific terminology of English and other Modern Indian Languages. I am extremely happy to publish this work under the Sansthan's Independence Golden Jubilee Series as such interdisciplinary efforts are most desirable in Sanskrit studies. As this is the pioneering effort, scholars are welcome to give us their opinion and suggestions so that they can be carried on in the second edition. The meter adopted for the verses is sometimes violative of prescription. However, taking into consideration of modern technical nature

विषयानुक्रमणिका

	आमुखम्		*iii-iv*
	भूमिका		*v-viii*
	आभार		*ix-x*
१.	प्रथमोऽध्यायः-	अभिनव शारीर संहिता के प्रयोजन एवं शारीरोपक्रम्	**1-12**
	i)	प्रयोजन	1
	ii)	जीवनोत्पत्ति-साम्प्रतिक अवधारणा	2
	iii)	अद्यतन शरीराङ्ग विभाजन की अवधारणा	3
	iv)	देह परमाणु	11
२.	द्वितीयोऽध्यायः-	अभिनिवृत्ति शारीरम्	**13-49**
	i)	धातुज पुरुष एवं एकधातुज पुरुष	15
	ii)	द्विधातुज पुरुष एवं त्रिधातुज पुरुष	16
	iii)	षड्धातुज पुरुष	17
	iv)	षड्भाव समुदाय	18
	v)	सप्तदश धातुज पुरुष	19
	vi)	चतुर्दश धातुज पुरुष	19
	vii)	कर्म पुरुष	20
	viii)	धातुओं के सम्बन्ध में आयुर्वेदिक अवधारणा	21
	ix)	सप्त धातुओं के कार्य	22
	x)	परमाणु/धातुओं के सम्बन्ध में साम्प्रत अवधारणा	44
	xi)	कोषिकामयः अन्तः संरक्षण धातु	45

अर्थ- कफ मानव शरीर को स्थिरता प्रदान करता है, और रूपाकृति प्रदान करता है। पित्त चयापचय करता है और वात सम्पूर्ण शरीर और धातुओं का संचालक है।

सुश्रुतश्चैतत्प्रत्येति पुरुषस्त्रिगुणात्मकः।
तस्मात् त्रिधातुजः पुरुषः इति सम्यगुदाहृतम्।।८१।।

सु.शा. १/१४

अर्थ- आचार्य सुश्रुत यह भी विश्वास करते हैं कि पुरुष त्रिगुणात्मक है। इसलिए भी पुरुष त्रिधातुज है।

षड्धातुज पुरुष

वैशेषिकाश्च मन्यन्ते पुरुषः षड्धातुजः।
पञ्चात्मकाः महाभूता षष्ठो जीवात्मरूपकः।।८२।।

सु.सू. १/२२

अर्थ- वैशेषिक दर्शन मानता है कि पुरुष षड्धातुज है। पाँच महाभूत और छठा जीवात्मा।

एभिः षड्धातुभिश्चैव पुरुषः समुत्पद्यते।
तस्मात्प्रोच्यते नूनं पुरुषः षड्धातुजः।।८३।।

अर्थ- इन ऊपर वर्णित पंच महाभूत और जीवात्मा के समवाय से पुरुष उत्पन्न होता है अतः यह षड्धातुज है।

षड्धातूद्भवः पुरुषः, रोगाः षड्धातुजाः स्मृताः।
समुदायः षड्धातूनां सांख्याचार्यैर्विवर्णितः।।८४।।

च.सू. २५/१५

अर्थ- छह धातुओं से पुरुष का उद्भव होता है और छह धातु (पदार्थों) से रोग उत्पन्न होते हैं। अतः पुरुष षड्धातुज समुदाय है ऐसा सांख्याचार्यों ने वर्णन किया है।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनकपुरी, नवदेहली-११००५८